RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

युवाओ में नशे के कारण गिरता शिक्षा का स्तर : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sanjay

M.Phil, Research Scholar, Deptt. of Sociology, M.D.U. Rohtak, Haryana 124001

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
शराब, ड्रग्स

ABSTRACT

आज के युग किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण और इसका महत्व और बढ़ जाता अगर वह युवा है, आज नशा एक भयकर बीमारी बन चूका है, आज का युवांनशो की चपेट में आता जा रहा है, जिससे उसके सोचने की शक्ति, शाररिक सतुंलन, जीवन की प्रति निराश, सामाजिक नियमों और मानको का उलघन जैसी अनेक प्रकार की समस्या आती है, शिक्षा में सफल होने के लिए नकारातम्कता का सहारा लेता है तथा वह अपनी इच्छाओ को पूरा करना चाहता है।,
शराब पीना, ड्रग्स, व अन्य प्रकार के नशे का सहारा लेता जिससे सीधा असर उसकी शिक्षा पर पड़ता है।

परिचय

आज हमारी या हमारे देश के लिए सबसे बड़ा चिंता का विषय छात्रों और युवाओं में तेजी से बड़ती नशाखोरी की प्रवृति है, एक शिक्षक अभिभावक या बतौर नागरीक हमारी जिम्मेवारी बनती है इस बिमारी को विकराल रूप धारण न करने दे, हमारे देश युवा एक रीढ़ की हड्डडी है, युवाओ के कंघे मजबूत होगे तो देश मजबुत होगा। आज भारत देश की 72 प्रतिशत से ज्यादा जनसंख्या गांव में होने वाली कृषि पर काफी हद तक निर्भर करता लेकिन आज के दीन युवाओ को अनेक समस्याओ ने जकड़ लिया, नशे की लत के कारण उसके पास सोचने और समझने क्षमता कम जिसके परिणाम स्वरूप, समाज मे अपराध की घटनाए, लड़ाई तथा अन्य घटनाएं हर रोज होती, एक समाजशास्त्री होने के नाते इन समस्याओं को उजागर करना होगा और इन समस्याओ का समाधान निकालना होगा, हमारे देश में नशा एक भयकर बिमारी बन चुका है। महानगरों का समाज यूवा वर्ग में नशे की तस्करी, हत्या अन्य अपराध की दुनिया खोल बैठा है। हिसा आंतकवाद का सीधा सम्बन्ध नशेबाजी में दिखाई पड़ता है। 1976 में गठीत "National Committee on drug abdication के चिकित्सकों ने सर्वेक्षण कर बताया कि सबसे अधिक युवा वर्ग नशे की चपेट में है, नशेबाजी के उत्तरदायी कारको में असुरक्षा की भावना, तनाव से मुक्ति की चाहत, हम उम्र समुह की नशेबाजी की पूरानी आदत, इच्छित शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में कभी, माता–पिता या परिवार की किसी व्यसनी का होना व्यक्तित्व हीनता की भावना, परिवार की अपराधी पृष्टभूमी, अभिभावकों उदासीनता और नैतिक संस्कार का अभाव युवा वर्ग को नशे का गुलाम बना रहा है।

साहीत्य समीक्षा

दुबे (1993) ने अपने अध्ययन पाया A study of life stress and social support of drug addietion में अवलोकन कर पाया है कि तनाव में रहने वाला व्यक्ति और सामाजिक जीवन, सामाजिक समर्थन व्यक्ति को ड्रग्स लेने पर मजबूर करता है। जिससे व्यक्ति धीरे–धीरे प्यसनी बन जाता है

सरोज प्रशात (1993) लिखती है कि ड्रग्स और मध व्यसनी सामाजिक सदर्भ में पैदा होते है और सामाजिक त्रिकोण से ही सामाजिक संदर्भ में पैदा होते है और सामाजिक त्रिकोण से ही सामाजिक संदर्भ में ही उपचारित किया जा सकता है।

अध्ययन उदेश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उदेशय रोहतक शहर में युवाओं नशे के कारण शिक्षा पर गिरते स्तर को ज्ञात करना है

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु विभिन्न स्तर की शोंध विधियों तथा तकनीको का प्रयोग किया गया है शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक क्या द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ो एवे सुचनाओं को आधार बनाया गया है। प्राथमिक आकड़े साक्षात्कार अनुसूचि द्वारा इक्ठ्ठे किए है और द्वितीय के लिए अखबारे, समाचारों, पत्रिकाओ के माध्यम से लिया है

तालिका न. 1
आपके नशे के कारण आपका अध्ययन प्रभावित होता है, के आधार पर

क्रम संख्या	नशे के कारण अध्यय पर प्रभाव	उत्तर दाताओ की संख्या	प्रतिशत
1	हां	32	57.14
2	नहीं	6	10.71
3	थोड़ा बहुत	8	14.28
4	कभी–कभी	10	17.85
	कुल सख्या	56	100.00

सारणी में दर्शाया की जो नशा करते क्या उस नशे का असर अध्ययन पर पड़ता इसमें पाया 32(57.14) प्रतिशत युवा ऐसे ये जिन्होने बताया हो असर पड़त है तथा 6(10.71) प्रतिशत युवा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ऐसे जिन्होने नहीं कहा गया 10(17.85) प्रतिशत युवा ऐसा जिन्होने हां कभी–कभी पड़ता है।

तालिका न. 2

क्या अध्ययन दौरान नशा करने बारे सोचते है: के आधार पर

क्रम संख्य	अध्ययन के दौरान नशा	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
1	नहीं सोचता	22	39.28
2	सोचता हुँ	8	14.28
3	थकान के समय	20	35.71
4	अध्ययन करने बाद पीता हूँ	6	10.71
	कुल संख्या	56	100.00

इस सारणी में दर्शाया गया है, 22(39.28) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे थे जों अध्ययन के दौरान नशे के बारे में नहीं सोचते है। तथा 8(14.28) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे थे जो अध्ययन के दौरान नशे के बारे में सोचते है। तथा 20(10.71) उत्तरदाता ऐसे ये जो थकान के समय शराब का प्रयोग करते है 6(10. 71)उत्तरदाता ऐसे ये जो अध्ययन करने बाद पीते है।

तालिका न. 3

नशे का परिणाम असर पड़ताए के आधार पर

क्रम संख्या	नशे का परिणाम पर प्रभाव पड़ता है	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
1	हां	18	32.14
2	नहीं	14	25
3	थोड़ा बहुत	17	30.35
4	पता नहीं चलता	7	12.5
	कुल संख्या	56	100.00

सारणी में दर्शाया गया की नशे का परिणाम प्रभाव पड़ता है। इसमें पाया गया कि नशे का परिणाम प्रभाव पड़ता है। इसमें पाया गया की 18(32.14) प्रतिशत उत्तरदाता आते थे। जिन्होने हाँ कहा तथा 14(25) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे में जिन्होने ना कहा तथा 17(30.35) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा कहते है। थोड़ा बहुत तथा 7(12.5) प्रतिशत ऐसे ये जो कहते है पता नहीं चलता है।

निष्कर्ष

अध्ययन पाया गया की नशें का अध्ययन असर कुछ हद पड़ता तथा कुछ लोगों का मानना की इसका कोई असर नहीं पड़ता है तथा इससे व्यक्ति के जिवन के सभी पक्ष प्रभावित होते है। व्यक्ति की सोचने समझने की शक्ति का कम करता तथा व्यक्ति इस पर निर्भर हो जाता है तो कहा जा सकता नशा एक भयकर बिमारी जो देश के युवाओं को कमजोर कर रहा है।

सुझाव

- नशे प्रति जागरूक्ता फैलाए
- पाठ्क्रम में नशे दुष्परिणामों के बारे में बताया जाए।
- सरकार द्वारा समय–समय संज्ञान लेना चाहिए।
- युवाओ जीवन महत्व के बारे में अवगत कराया जाए।
- पहेला सुख नीरोगी काया समझया जाए।

सदर्भ

1. Agarwal, Rastimi (1995), Drug Abusc : Socio-Psychological Perspective ihtervtion Strategies, Shipra Publicution.
2. Ahuja ram (2016) social problem, New Delhi, Rawat Publications.
3. Gupta, Sunil (2012), Social Problems, New Delhi, ABD Publisher.
4. Hindustan times 2009.

RRIJM 2015, All Rights Reserved